सम्पादकीय आलेख
सावधान रहें, पर संवेदनहीन न बन जायें 2

पीड़ितों की प्राणरक्षा के लिए पूरे देश में सक्रिय है गायत्री परिवार 3

कोरोना महामारी के समय गायत्री परिवार की बहुमुखी सक्रियता 4

कैसे तैयार करें जल संरक्षण के लिए विविध संरचनाएँ 6

पीड़ा निवारण में जुटें, हम लोगों के कान और कंधा बनें। 7

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 जून 2021

वर्ष : 33, अंक : 23
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : ..... 27 मई 2021
वार्षिक चंदा : ....₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-
प्रति अंक : .....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

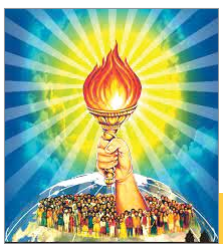

आत्मोन्नति का जादूई मंत्र है

'मैं- अकेला' नहीं, 'हम-सब'

अखण्ड ज्योति, अगस्त 1944 से संकलित, सम्पादित

आत्मोन्नति और बन्धन मुक्ति

आध्यात्म शास्त्र की सम्पूर्ण रचना केवल एक आधार पर हुई है। वह आधार है-'आत्मोन्नति'। आत्मोन्नति का तात्पर्य है आत्मभाव का, अहंभाव का विस्तार। शास्त्रों में वर्णित ब्रह्मविद्या का मूलभूत तथ्य यह है कि मनुष्य स्वार्थ के बन्धनों से 'मुक्ति' प्राप्त करे। आत्मा को परमात्मा से मिला दे। 'जीव' से बढ़ कर 'शिव' बने, तुच्छता से उठकर महान बने। यह सभी आदेश एक ही दिशा में संकेत करते हैं कि हमें अपनेपन के, आत्मिकता के दायरे को बढ़ाना चाहिए। 'मैं' की संकुचितता को बढ़ा कर 'हम' की महानता की ओर अग्रसर होना चाहिए। यह मर्यादा जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, वैसे ही वैसे मनुष्य की आत्मोन्नति समझी जाती है। जो 'परमार्थ में स्वार्थ' के सिद्धांत को मानता हुआ दूसरों के हानि-लाभ में अपना हानि-लाभ देखता है वह उतना ही बड़ा आत्मज्ञानी है।

ब्रह्मविद्या समस्त विद्याओं की जननी है। आत्मोन्नति सब उन्नतियों की जड़ है। यह सिद्धांत इतने ध्रुव सत्य हैं कि इनकी सच्चाई पर संदेह करने की जरा भी गुंजाइश नहीं रह जाती। जब किसी व्यक्ति, जाति या देश ने जिस हद तक इन सिद्धांतों को अपनाया है तब उसने उसी सीमा में भौतिक उन्नति की है। जब भी जिस देश ने इन सिद्धांतों को जितना ढीला छोड़ा है, तभी वह उतना ही नीचे गिर गया है। यूरोपीय देशों की उन्नति और भारत की अवनति का भी यही कारण है।

पतन-पराभव की समीक्षा

भारतवर्ष के पतन के कारणों पर आप गंभीरता से विचार करेंगे तो आपको वैसा कोई दुर्गुण यहाँ के निवासियों में न मिलेगा जिनके कारण राष्ट्रों की दुर्गति होती है। हमारे देश में ऐसे-ऐसे आला दर्जे के दिमाग थे और हैं, जिनका मुकाबला करने में संसार के अन्य देश अभी तक पीछे हैं। यहाँ के निवासियों की बहादुरी की गौरवगाथाओं से इतिहास रंगा हुआ है। साधारण जनता पर दृष्टि डालते हैं तो वह विलासी या अकर्मण्य भी नहीं हैं। पूर्वकाल में तो अधिक धार्मिक होने के कारण और वर्तमान समय में दरिद्रता के कारण यहाँ की जनता भोग-विलासों में मस्त नहीं हो पाई। कड़ा परिश्रम करने में भी भारतीय अद्वितीय हैं, सस्ते से सस्ता अपौष्टिक भोजन खाकर यहाँ के किसान-मजदूर जितना काम करते हैं, उतना काम अन्य देशों के श्रमजीवी नहीं कर पाते।

यों थोड़े-बहुत दोष सर्वत्र पाये जाते हैं, वैसे दोष यहाँ भी रहे हैं और रहेंगे, पर वे इतने प्रचंड नहीं हैं, जिनके कारण सारा देश इतने गहरे गर्त में गिर पड़े। आप अत्यन्त गंभीरतापूर्वक विचार करेंगे तो इसका कारण एक ही मिलेगा, वह है- आत्मिक पतन-ख़ुदगर्ज़ी-अपना दायरा संकीर्ण रखना। यह दुर्गुण जिस दिन से भारतवासियों ने अपनाया, उसी दिन से पतन आरम्भ हो गया। यह दुर्गुण इतना जबरदस्त है कि इसके आगे और सारी अच्छाइयाँ फीकी पड़ जाती हैं।

अंग्रेजों का स्वदेश प्रेम

अंग्रेजी राज्य में ईस्ट इंडिया कम्पनी के जितने भी गवर्नर भारत आये, उनमें से कोई भी ऐसा न था जिसने अपने देश के लाभ को भुलाकर अपने निजी लाभ की बात सोची हो। यदि क्लाइव, हेस्टिंग्स आदि ऐसा सोचते तो वे कम्पनी को धता बता कर अपना खुद का राज्य स्थापित कर सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसी बात स्वप्न में भी नहीं सोची। वे खुद मामूली नौकर बने रहे, पर अपने देश के लाभ के लिए उन्होंने यहाँ साम्राज्य स्थापित किया, व्यापार बढ़ाया और भी जो कुछ कर सकते थे, किया। आज भी अंग्रेज वैज्ञानिक, नेता, उद्योगपति, विद्वान, सैनिक और साधारण जनता अपने देश के हित-अनहित में अपना हित-अनहित समझते हैं, व्यक्तिगत स्वार्थ की अपेक्षा सामूहिक स्वार्थ को वे अधिक महत्व देते हैं। यही कारण है कि वह देश समृद्ध और सम्पन्न बना हुआ है। जब तक उनमें यह सद्गुण बना रहेगा, तब तक वे निश्चयपूर्वक सुखी रहेंगे।

हमारे देश में हर व्यक्ति अपने अकेले के स्वार्थ को महत्व देता है। अपने या अपने बाल-बच्चों के हानि-लाभ से आगे उनकी दृष्टि जाती ही नहीं। अनेक अमीर लोग जब निस्संतान होते हैं तो उनका ध्यान अपने देश और जाति की दुर्दशा को दूर करने के लिए अपना धन लगा जाने की ओर नहीं जाता, वरन् कहीं से गोद रखने के लिए लड़के की तलाश होती है, जिससे उस धन का खरचने, विलसने वाला कोई पैदा हो जाए।

उन्नति का मंत्र-मैं नहीं, हम

आध्यात्मिक या धार्मिक क्षेत्र में देखिए-हर धार्मिक व्यक्ति अपनी निजी मुक्ति, निजी स्वर्ग की तृष्णा से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ता। साधु, महात्मा, गुरु, पुरोहित अपने समय को बुरी तरह बरबाद करना पसंद करते हैं, पर अपने समाज और देश की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखते। फल यह होता है कि चन्द आदमी धनी, विद्वान, प्रतिभाशाली, गुणी, सिद्ध आदि बन जाते हैं। वे अपनी निजी उन्नति खूब कर लेते हैं, पर उनकी इस उन्नति से देश को कुछ भी लाभ नहीं पहुँचता। **जितने धनी, विद्वान और महात्मा इस देश में हैं, इतने यदि किसी अन्य देश में हुए होते तो आज वह संसार का मुकुटमणि हुआ होता, संसार की सुख-शांति का पथ प्रदर्शक हुआ होता।**

हमारा देश गरीब है, दुःखी है, पीड़ित है, इसका सर्वोपरि कारण हम लोगों की संकुचित स्वार्थवृत्ति है। 'अपने मतलब से मतलब' की मनोवृत्ति ने हमें मिट्टी में मिला दिया। जब तक यह घृणास्पद, नारकीय और पाशविक मनोवृत्ति हमारी बनी रहेगी, तब तक चन्द आदमी व्यक्तिगत रूप से कुछ 'बड़े' भले बन जायें, पर सामूहिक रूप से हम लोग पीड़ित और पतित ही रहेंगे। सामूहिक उन्नति तभी होगी जब मनुष्य 'मैं-अकेला' की मर्यादा में सोचना छोड़कर 'हम-सब' की मयार्दा में सोचना और काम करना आरम्भ करेंगे। 'सब की उन्नति में अपनी उन्नति' की मनोवृत्ति में वह जादू है, जिसके द्वारा समाज की भी उन्नति होती है और व्यक्ति की भी। इंग्लैण्ड आदि देश इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

पाठको, विचार करो! विवेक को जागृत करके सोचो! अध्यात्म शास्त्र के इस एक मात्र-सूर्य से प्रकाशवान, ध्रुव से अटल सिद्धान्त को समझो। सबकी उन्नति में आपकी उन्नति है, इसलिए केवल व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से ही काम न करो, वरन् यह भी सोचो कि कार्य का परिणाम हम सब के लिए क्या होगा। 'मैं-अकेला' से बढ़कर 'हम-सब' की ओर आपकी जितनी प्रगति होगी, उतनी ही आपकी आत्मोन्नति गिनी जाएगी। याद रखो, जिस देश की जितनी आत्मोन्नति होगी वह उतना ही सुखी और समृद्ध होगा। देश के सुख में ही व्यक्ति का सुख भी निहित है। दुःखी पड़ोसियों के बीच रहकर कोई बड़ा आदमी भी शान्तिपूर्वक सुख नहीं भोग सकता। इसलिए हे सुख-शान्ति के इच्छुको! हे अध्यात्म विद्या के जिज्ञासुओ! उठो, घर-घर में मनुष्य में यह भाव भर दो कि वह ख़ुदगर्ज़ी के बन्धनों को तोड़कर परमार्थ रूपी मुक्ति की ओर बढ़े, आत्मा का दायरा बढ़ा कर उसे परमात्मा बनाये। 'मैं-अकेला' की निकृष्ट नारकीय वृत्ति को छोड़ कर 'हम-सब' की दिव्य भावनाओं को अपनायें। इसी मन्त्र में हमारा और हमारे समाज का उत्थान निहित है।

युग परिवर्तन के देवता महाकाल को अपने घर-परिवार का सदस्य समझें

समाज-निर्माण के लिए हमें युगसृजन सेना का सैनिक बनकर संगठनात्मक, प्रचारात्मक रचनात्मक और संघर्षात्मक मोरचे सँभालने चाहिए। इसके लिए अपने समय और साधनों का अधिकाधिक अनुदान विश्वमानव के चरणों पर समर्पित करना चाहिए। साधारणतया आठ घंटे आजीविका उपार्जन के लिए, सात घंटा शयन-विश्राम के लिए, पाँच घंटा घरेलू और शारीरिक कामों के लिए, कुल मिलाकर 20 घंटे निजी कामों में खरच करने चाहिए और 4 घंटे समाजनिर्माण की उपरोक्त चार क्रिया-प्रक्रियाओं में लगाने चाहिए।

एक घंटा समय और एक रुपया प्रतिदिन विचारक्रांति के लिए लगाना तो आरंभिक सदस्यता शर्त है। कर्मठ कार्यकर्ताओं को इस न्यूनतम अनुदान तक सीमित न रहकर बढ़े-चढ़े त्याग-बलिदान का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। महीने में एक दिन की आजीविका समाज-निर्माण के लिए हर उदार व्यक्ति आसानी से खरच कर सकता है।

यदि हृदय में विशालता हो तो युग परिवर्तन के देवता महाकाल को घर-परिवार के एक सदस्य के रूप में गिना जा सकता है। समझा जा सकता है कि यदि एक संतान और होती तो उसका भी किसी प्रकार भरण-पोषण करना ही पड़ता। वैसा मानकर चला जाए तो निर्धन व्यक्ति भी इस महान प्रयोजन के लिए अपना अनुकरणीय अनुदान आर्थिक स्तर पर भी प्रस्तुत कर सकता है। समय, श्रम, प्रभाव, मनोयोग एवं धन जैसे समस्त साधनों की बढ़ी-चढ़ी मात्रा हमें युगदेवता के सम्मुख प्रस्तुत करनी चाहिए। पेट और प्रजनन के लिए, लोभ और मोह के लिए ही सारी शक्तियाँ लगी रहें तो यह किसी आदर्शवादी और विचारशील व्यक्ति के लिए लज्जा की बात ही समझी जा सकती है। **-अखण्ड ज्योति दिसंबर 1973, पृष्ठ-64**

सम्पादकीय

जन्मशताब्दी वर्ष-2026 को लक्ष्य कर देवपरिवार निर्माण के योजनाबद्ध प्रयास हों

वर्तमान समय की करुण पुकार, पारिवारिक संवेदनाओं का हो विस्तार

शानदार शुभारम्भ हुआ

इन दिनों अपना मिशन परम वन्दनीया माताजी की जन्म शताब्दी-सन् 2026 तक पावन गुरुसत्ता के सतयुगी संकल्पों को साकार करने की दिशा में योजनाबद्ध चरण बढ़ा रहा है। इस दिशा में शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में सफलता का एक शानदार अध्याय लिखा जा रहा है। प्रथम चरण 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अत्यंत लोकप्रिय एवं क्रान्तिकारी सिद्ध हुआ। प्राणवान कार्यकर्त्ताओं के नैष्ठिक प्रयासों से वर्ष 2021 के पहले तीन माह में ही 14 लाख से अधिक नए घरों में देवस्थापनाएँ हुईं।

'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान का लक्ष्य स्पष्ट है। इसके माध्यम से घर-घर गंगा, घर-घर गायत्री, घर-घर यज्ञ, घर-घर संस्कारों की पुण्य परम्परा को पुनर्जीवित करने के प्रयास हो रहे हैं। इस अभियान को लोगों ने बड़ी श्रद्धा के साथ अपनाया है। विशिष्ट महानुभावों से लेकर अधिकारी, व्यापारी, उद्योगपति, वैज्ञानिक, शिक्षाविद, लेखक, जनप्रतिनिधि, कलाकार आदि हर वर्ग के लोगों तक परिजनों ने इसे पहुँचाया है। नवसृजन अभियान के प्रति उनकी आस्था जगाई है।

अधिक से अधिक देवपरिवारों का निर्माण हो, थकी, हारी, हताश, निराश मानवता में नवप्राणों का संचार हो, यही हमारा लक्ष्य है। परम पूज्य गुरुदेव ने नवयुग की स्थापना के तीन चरण बताए हैं-व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण। देवपरिवार निर्माण से यह तीनों ही चरण पूरे होते हैं। देवपरिवार तभी बनेंगे जब व्यक्ति में अंतर्निहित देवत्व जगेगा और जिस समाज में देवपरिवार बसते हैं वह स्वतः ही स्वर्ग बनता चला जायेगा।

सन् 2026 परम वन्दनीया माताजी का जन्म शताब्दी वर्ष है। इस महत्त्वपूर्ण पड़ाव तक यदि हम लाखों नए देवपरिवारों की श्रृद्धाञ्जलि अपनी आराध्य सत्ता को समर्पित कर सके तो यह एक सार्थक श्रद्धाञ्जलि होगी। जिस अपनत्व, प्यार, त्याग, समर्पण के साथ गुरुदेव-माताजी ने यह विराट गायत्री परिवार बनाया है उसका विस्तार ही हमारा युगधर्म है।

'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के अन्तर्गत हो रही देवस्थापनाएँ देवपरिवारों के निर्माण का प्रारम्भ मात्र कहा जा सकता है। जहाँ देवस्थापनाएँ हो रही हैं उनमें देवत्व के संवर्धन के लिए लोगों के चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को बदलने की आवश्यकता है। देवपरिवारों का निर्माण मानव में देवत्व जगाने का अभियान है। निःसंदेह यह जीवन साधना से ही संभव है और समयसाध्य भी। परम पूज्य गुरुदेव ने मानव में देवत्व के जागरण के लिए पाँच सूत्र दिए हैं-1. उपासना, 2.साधना, 3. आराधना, 4. समयदान और 5. अंशदान। जो भी इन सूत्रों को अपनाता है उसका व्यक्तित्व परिष्कृत होता जाता है। चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में पवित्रता, प्रखरता बढ़ती है। आत्मबल की वृद्धि से आदर्शों की राह पर चलने की हिम्मत बढ़ती है। यह सुनिश्चित सत्य है कि जैसे-जैसे जीवन में देवत्व बढ़ता है, वैसे-वैसे जीवन से भय, हताशा, निराशा आदि का अन्त होता जाता है।

हमारा अगला दायित्व

जिन घरों में देवस्थापना की गई है, उन घर-परिवारों में युग निर्माण आन्दोलन के प्रति आस्था बढ़ाकर उनके सदस्यों को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने के लिए निरन्तर प्रेरित, प्रोत्साहित एवं संगठित करना हमारा दायित्व होना चाहिए। इसके लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम अपनाने होंगे और निरन्तर सम्पर्क की भी आवश्यकता होगी। जिन घरों में देवस्थापना की गई है, उन घरों के सदस्यों को निम्न कार्यक्रमों से जोड़ने के सतत प्रयास किए जाने की आवश्यकता है -

- विभिन्न साधना अभियानों में भागीदारी।
- जन्मदिन-विवाहदिन एवं अन्य संस्कारों का प्रचलन बढ़े।
- प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल जैसी प्राथमिक इकाइयों से जोड़ा जाय।
- रचनात्मक कार्यक्रमों में भागीदारी होने लगे।
- अपने मिशन की पत्रिकाओं-अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान आदि के ग्राहक-पाठक बनाया जाय।
- स्थानीय स्तर पर प्रमुख पर्व आयोजनों में उन्हें आमंत्रित किया जाय।

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी ने अपने जीवन का कण-कण और क्षण-क्षण नवयुग सृजन के लिए समर्पित कर दिया। उसे साकार करने के लिए उनके मानस पुत्र, युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े लाखों स्वयंसेवक अपनी श्रद्धा एवं समय-सम्पदा की सर्वोत्तम आहुतियाँ समर्पित कर रहे हैं। इस साझेदारी के गौरव एवं प्राप्त आत्मिक संतोष की अनुभूति को शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। हर व्यक्ति के जीवन में यह सौभाग्य निरन्तर बढ़ता रहे ऐसी गुरुसत्ता से प्रार्थना।

देवपरिवार की कुछ आदर्श परम्पराएँ

- देव उपासना, जीवन साधना एवं सत्साहित्य के स्वाध्याय का नियमित क्रम चलता हो।
- संस्कार परम्परा का अवलम्बन हो।
- घर में बलिवैश्वदेव यज्ञ की परम्परा चल पड़े।
- परस्पर प्रेम, सहकार, सद्भाव बढ़ता रहे।
- किसी प्रकार का नशा न किया जाता हो।
- कुरीति, दुष्प्रथा व मूढ़ मान्यताओं से रहित हो।
- परस्पर हितों का ध्यान रखा जाता हो।
- परिवार के सदस्यों की अपने समाज के निर्माण में सक्रिय भूमिका हो।
- समाज के नवनिर्माण के लिए समयदान-अंशदान की अनिवार्यता समझी जाती हो। इस निमित्त ज्ञानघटों की स्थापना हो।
- पारिवारिक संगोष्ठियों में स्वाध्याय का नियमित क्रम जुड़े।

हम यह अवसर चूकें नहीं

सावधान रहें, पर संवेदनहीन न बन जायें

इन दिनों विश्व मानवता बड़े कठिन दौर से गुज़र रही है। एक ऐसी महामारी सारे विश्व में छाई है, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। कोरोना महामारी ने अपनों को अपनों से अलग कर दिया। कहीं एक बूढ़ा बाप अकेला ही अपने जवान बेटे को लेकर श्मशान तक पहुँचता देखा जा रहा है तो कहीं कोरोना संक्रमित सुखी और सम्पन्न परिवार की गृहणी अपने एक दिन के नवजात शिशु को लेकर दर-दर भटक रही है, पर परिवार के लोग उसकी ओर देखने का साहस तक नहीं कर पा रहे।

यह वह समय है जब धन, पद, प्रतिष्ठा सब धूल-धूसरित होती दिखाई दे रही है। हाथों में नोटों की गड्डी है, पर अस्पताल में बेड नहीं है। कहीं ऑक्सीजन की कमी के कारण लोग दम तोड़ते दिखाई देते हैं। घर में सभी बीमार हैं, ऐसे में दो वख़्त की रोटी की व्यवस्था कैसे हो?

यह वह कठिन समय है जब मानवता संवेदनाओं की कसौटी पर कसी जा रही है। अपने तो अनेक हैं, लेकिन अपनत्व की हर किसी को तलाश है। यह बेसहाराओं को सहारा देने का समय है, डरे-सहमे लोगों में नवविश्वास जगाने का समय है, हताश-निराश मानवता में नए प्राण फूँकने का समय है। यह उन पारिवारिक भावनाओं को चरितार्थ करने का समय है, जिन्हें परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी हमें हमेशा सिखाते रहे। यह अपने देवत्व को व अपने उपदेशों को कसौटी पर परखने का समय है।

यह सच है कि संकट बहुत बड़ा है। लेकिन हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि सच्चा शूरवीर और सच्चा उपदेशक वही है जो समझदारीपूर्वक संकटों का सामना करता है और उन पर विजय प्राप्त करता है। निःसंदेह व्यक्ति चाहे तो सावधानी और सुरक्षा के साथ एक-दूसरे की सहायता कर सकता है। आज चिकित्साकर्मी, पुलिस और सेना के जवान, एम्बुलेंस चालक, जीवनावश्यक वस्तुओं के विक्रेता, ऑटो रिक्शा चालक आदि सब इसी भावना के साथ पीड़ित मानवता की सेवा कर रहे हैं। उनकी सेवाएँ अभिनन्दनीय हैं।

सारे देश में आज अखिल विश्व गायत्री परिवार की हज़ारों शाखाएँ और लाखों लोग तथा कई अन्य संगठन इन्हीं पारिवारिक भावनाओं के साथ पीड़ित मानवता की सेवा में जुटे हैं। सच मानें तो यही देव परिवार है। यही सच्चा देवत्व है। जब मानवता संकट में हो और संवेदनाएँ सुप्त पड़ी रहें, सूख जायें तो वह जीवन किस काम का!

समय ने, देवत्व को पुकारा है, मानवीय संवेदानाओं को झकझोरा है। जो जिसके जितना काम आ सके उसे दूसरों का सहयोग करना ही चाहिए। यह कहने नहीं, कर दिखाने का समय है। संकटग्रस्त व्यक्ति को मिली सहायता वह जीवनभर नहीं भुला सकता। किसी को लाख उपदेश दिये जायें, उससे कहीं अधिक प्रभावी होता है उसकी आवश्यकता के समय की गई सेवा, दी गई सहायता। जब मानवता हा-हाकर कर रही है तब 'वसुधैव कुटुम्बकम' की सनातन संस्कृति को चरितार्थ कर दिखाने और परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी के बताये सूत्र-सिद्धान्तों को जीवन में उतारने का यही सही अवसर है। सही मायनों में अपने प्यार, सहकार, सेवा-साहयता से देव परिवारों के निर्माण का इससे अधिक उपयुक्त अवसर भला और कौन-सा हो सकता है! कोरोना महामारी की इन विकराल परिस्थितियों में हम संवेदनहीन न रहें। संक्रमण से बचाव की हर प्रकार की सावधानी को बरतते हुए जिससे जितना बन पड़े उतना करने में कोई भी पीछे न रहे।

योग और गायत्री मंत्र का स्वास्थ्य पर प्रभाव

कोरोना के उपचार में गायत्री मंत्र के प्रभाव पर शोध

इन दिनों कोविड-19 से मुक्ति के लिए पूरी दुनिया में तरह-तरह के प्रयोग किए जा रहे हैं। एम्स ऋषिकेश की डॉ. रुचि दुआ कोरोना के रोगियों पर योग और गायत्री महामंत्र के प्रभाव का अध्ययन कर रही हैं। एम्स ऋषिकेश के पी.आर.ओ. श्री हरीश थपलियाल के अनुसार मार्च महीने में यह शोध आरम्भ हुई है। इसे पूरा होने और किसी निष्कर्ष पर पहुँचने में कम से कम छः माह का समय और लग सकता है।

योग और गायत्री मंत्र के प्रभाव पर अनेकों शोधकार्य हुए हैं। इनकी शरीर में विद्यमान मर्म बिन्दुओं के उद्दीपन, सकारात्मक हार्मोन्स के स्राव से जीवनी शक्ति संवर्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। निश्चित ही योगाभ्यास और गायत्री मंत्र के उच्चारण से नकारात्मकता दूर होती है और चिंतन में सकारात्मकता बढ़ती है। कोरोना के मरीज़ों पर इनका सकारात्मक प्रभाव सुनिश्चित है, आवश्यकता उन्हें वैज्ञानिक ढंग से प्रमाणित करने की है। डॉ. रुचि दुआ ने इस दिशा में प्रशंसनीय कदम बढ़ाया है।

आईसीएमआर से मिली अनुमति

किसी भी चिकित्सा पद्धति के मानवीय परीक्षण के लिए आईसीएमआर की अनुमति आवश्यक होती है। यह अध्ययन भी आईसीएमआर की अनुमति मिलने के बाद ही किया जा रहा है। 20 मरीज़ों का चयन कर उन्हें दो वर्गों में बाँटा गया है। 10 मरीज़ों का उपचार कोविड-19 के मानकों के अनुसार हो रहा है, जबकि अन्य 10 को इस उपचार के साथ गायत्री मंत्र का जप करने तथा योगाभ्यास के लिए कहा गया है। 14 दिनों बाद सभी का पुनः परीक्षण होता है और उनकी हालत में सुधार पर पड़ने वाले परिणामों का अध्ययन किया जा रहा है।

कोरोना त्रासदी

पीड़ितों की प्राणरक्षा के लिए पूरे देश में सक्रिय है गायत्री परिवार

ऑक्सीजन उपलब्ध कराकर मरीज़ों को दिया जीवनदान

गढ़पुरा, बेगूसराय। बिहार

ऑक्सीजन की भारी कमी के दिनों में गढ़पुरा के प्रखंड संचालक श्री सुशील कुमार सिंघानिया निःशुल्क ऑक्सीजन गैस सिलेण्डर उपलब्ध कराकर अनेक लोगों की जान बचा रहे हैं। वे बेसहारा ज़रूरतमंदों को सहारा देने के लिए अहर्निश सक्रिय हैं।

20 लोगों की जान बचाई

उनके सहयोग से लगभग 20 लोगों की जान बच गई। उनकी सेवाओं के कारण गढ़पुरा के वॉर्ड 11 के 23 वर्षीय रोहित राय, वॉर्ड 8 निवासी महेन्द्र महतो की माँ, कोरैय के संजीव ठाकुर के चाची, गाँव मुर्रहा में वासुदेव दास, दुनही पंचायत के मणिकपुर गाँव में मुकेश कुमार विक्रम के फूफा आदि की जान बचाई जा सकी है।

सैनिटाइज़ेशन में जुटे

कोरोना संक्रमण काल में श्री सुशील कुमार सिंघानिया जनजीवन की रक्षा में कई प्रकार की सेवाएँ कर रहे हैं। उन्हीं में एक है सेनिटाइज़ेशन का कार्य। 7 मई को गढ़पुरा के वॉर्ड संख्या 17, महादलित डोम के मुहल्ले से सैनिटाइजेशन अभियान का शुभारम्भ हुआ। उन्होंने गली-गली, घरों के चारों तरफ, विशेषकर गंदे जगहों को सैनिटाइज़ किया।

आप बीती से उभरा संकल्प

श्री सुशील कुमार सिंघानिया ने बताया कि पिछले वर्ष ऑक्सीजन की कमी के कारण उनके दो सगे संबंधियों का देहावसान हो गया था। तभी उन्होंने ऑक्सीजन के अभाव में दम तोड़ते लोगों को बचाने का निश्चय किया। सुपुत्र विकास कुमार के सहयोग से दो ऑक्सीजन गैस सिलेंडर खरीदे और सेवा कार्यों में जुट गए।

इससे पूर्व श्री सुशील कुमार सिंघानिया ने टीकाकरण, कोरोना की जाँच और मास्क वितरण के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है।

कोडरमा : जिला प्रशासन को उपलब्ध कराये जा रहे हैं ऑक्सीजन सिलेण्डर

बसना, महासमुंद में तहसीलदार को सिलेण्डर भेंट करते हुए परिजन

गढ़पुरा, बेगूसराय में मरीज़ के घर पहुँचाया सिलेण्डर

जिला प्रशासन के माध्यम से 101 सिलेण्डर दिये

कोडरमा। झारखण्ड

युवा प्रकोष्ठ कोडरमा लगातार कोरोना मरीज़ों को हर प्रकार की सहायता पहुँचाने के लिए सक्रिय है। सहृदय एवं प्राणवान युवा कार्यकर्त्ता श्री शिव कुमार वर्णवाल की विशेष सक्रियता और सहयोग के परिणामस्वरूप गायत्री परिवार द्वारा पिछले एक माह से ज़रूरतमंद मरीज़ों को ऑक्सीजीन सिलेण्डर पहुँचाने का काम लगातार चल रहा है। समाचार मिलने तक उन्होंने 20 दिनों में अबतक 101 ऑक्सिजन सिलिंडर जिला प्रसाशन के माध्यम से 5 हॉस्पिटल में, आपातकालीन एम्बुलेंस सेवा के लिए एवं अन्य 8 लोगों को उनके घर पर दिये। इस पुनीत कार्य में कोडरमा नगर के लोगों का भरपूर सहयोग मिला ।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की सहायता की

बसना, महासमुन्द। छत्तीसगढ़

करोना महामारी के इस संकटकालीन वेला में गायत्री परिवार की स्थानीय शाखा ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बसना का विशेष सहयोग करते हुए दो ऑक्सीजन सिलेण्डर भेंट किये। 10 मई को यह सिलेण्डर तहसीलदार श्री राम प्रसाद बघेल व खण्ड चिकित्सा अधिकारी श्री जय प्रकाश प्रधान की मुख्य उपस्थिति में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र को सप्रेम भेंट किये गये। गायत्री परिवार की ओर से इस अवसर पर श्री अनिल कुमार कानूनगो, श्री भोलसिंग सिदार,श्री बलराम पटेल मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

आइसोलेशन सेण्टर बनाया

आलिदर, जूनागढ़। गुजरात

गायत्री परिवार के अग्रणी कार्यकर्त्ता श्री जगमालभाई परमार के प्रयासों से आलिदार गाँव में कोरोना मरीज़ों के लाभार्थ 10 बेड का आइसोलेशन सेण्टर स्थापित किया गया है। इस केन्द्र में पाँच ऑक्सीजन सिलेंडर हैं। वहाँ भरती मरीज़ों के लिए एक समय के भोजन की व्यवस्था भी की गई है। केलवानी मंडल के अध्यक्ष, सरपंच श्री और ग्रामीणों ने इस सेवा कार्य के लिए उनका आभार व्यक्त किया, सहयोग का आश्वासन दिया।

₹ 5,00,000 की दवाइयाँ दीं

बाड़मेर। राजस्थान

गायत्री परिवार बाड़मेर ने स्थानीय राजकीय हॉस्पिटल में दवाइयों की कमी को देखते हुए पाँच लाख रुपये की दवाइयाँ पी.एम.ओ. बाड़मेर को सौंपीं। इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर श्री ओ.पी. विश्नोई, गायत्री परिवार के श्री माँगीलाल शर्मा, रेवंत सिंह, महेश भूतड़ा, लक्ष्मीनारायण जोशी, मंगलाराम विश्नोई आदि अनेक लोग उपस्थित थे।

जिला कलेक्टर श्री ओ.पी. विश्नोई को दवाइयाँ सोंपते बाड़मेर के परिजन

प्लाज़्मा एवं रक्तदान

बीकानेर। राजस्थान

डिवाइन इण्डिया यूथ एसोसिएशन (गायत्री परिवार) की बीकानेर शाखा ने राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में युवाओं को रक्तदान करने तथा प्लाज़्मा दान करने के लिए प्रेरित करने का अभियान चला रखा है। जिला समन्वयक श्री धनंजय सारस्वत ने बताया कि उनका संगठन युवाओं को वैक्सीनेशन कर स्वयं की जान बचाने से पहले रक्त या प्लाज़्मा का दान करने के लिए प्रेरित कर रही है, जिसका समाज पर सकारात्मक प्रभाव भी देखा गया है। तरुण राठी, अविनाश सिंह, लक्ष्मण सिंह, राकेश स्वामी, हिमांशु शर्मा, हेमंत सिंह आदि अनेक युवाओं ने वैक्सीनेशन के लिए पंजीयन कराने से पूर्व रक्तदान किया।

विशेष सुविधा उपकरण

जोधपुर। राजस्थान

गायत्री परिवार की प्रेरणा से जोधपुर के उदारमना श्री गणेश भाटी, जोधपुर इंजीनियरिंग वर्क्स ने ऑक्सीजन सिलेण्डर्स को आसानी से लाने-जाने की सुविधा के लिए 20 ट्रॉली बनाकर भेंट कीं। इस अवसर पर जिला कलेक्टर श्री ओ.पी. विश्नोई, चिकित्सालय के वरिष्ठ अधिकारी और गायत्री परिवार के परिजन उपस्थित थे।

एम्बुलेंस सेवा

जाँजगीर चाँपा। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार जाँजगीर शाखा द्वारा कोविड-19 प्रभावित रोगियों के लाभार्थ निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा प्रदान की जा रही है।

मालखरौदा शाखा के परिजनों ने उपलब्ध कराई निःशुल्क वाहन सेवा

जोधपुर शाखा ने कलेक्टर को सौंपे ऑक्सीजन ट्रॉली स्टैण्ड

मिशन के लिए समर्पित चिकित्सक दम्पति ने लगभग 500 कोरोना मरीज़ों की जान बचाई

वडोदरा। गुजरात : गायत्री परिवार के सेवाभावी चिकित्सक दम्पति डॉ. मधु खण्डेलवाल नैनीवाल, एम. डी. (इण्टेन्सिव केअर कंसल्टेण्ट) एवं डॉ. ललित नैनीवाल, एम.डी. एसोसिएट प्रोफेसर जीएमईआरएस, गोत्री मेडिकल कॉलेज ने अपनी विशिष्ट योग्यता एवं सेवाभावना का परिचय देते हुए विगत एक वर्षों में लगभग 500 गंभीर हालत वाले मरीज़ों को बचाने में सफलता पाई है। डॉ. मधु नैनीवाल ने बताया कि वे मरीज़ों को फोन से सलाह देती हैं और गुजरात-राजस्थान में स्थित उनके सहयोगी-साथी मरीजों की स्थिति-परिस्थति आदि पर बारीकी के साथ ध्यान रखते हैं।

मरीज़ों तक पहुँचा रहे हैं-हारिये न हिम्मत

अहमदाबाद। गुजरात : गायत्री परिवार सानंद शाखा कोरोना मरीज़ों को परिस्थितियों से लड़ने का मनोबल प्रदान करने के लिए उन तक पूज्य गुरुदेव की अत्यंत प्रेरणादायी पुस्तक 'हारिये न हिम्मत' पहुँचाने के अभियान में जुट गई है। उनके द्वारा एक पृष्ठ प्रतिदिन पढ़ने और उस पर चिन्तन-मनन करने का आह्वान किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ के हर जिले में सक्रिय हैं आपदा प्रबन्धन वाहिनियाँ

रायपुर। छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ के प्रान्तीय संगठन ने कोरोना महामारी के समय पीड़ित मानवता की सेवा के लिए जोन समन्वयक श्री दिलीप पाणीग्रही के मार्गदर्शन में पूरे प्रदेश में आपदा प्रबन्धन वाहिनियों का गठन किया है। यह वाहिनियाँ निरंतर निःस्वार्थ भाव से शासन-प्रशासन के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं। इनके द्वारा पूरे प्रदेश में ज़रूरतमंदों को ऑक्सीजन सिलेण्डर प्रदान करने, निःशुल्क भोजन एवं दवाएँ उपलब्ध कराने तथा मनोवैज्ञानिक परामर्श देने जैसे कार्य किए जा रहे हैं। जोन समन्वयक द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जिला समन्वयकों एवं प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के बीच परस्पर समन्वय एवं सहयोग स्थापित किया जा रहा है।

रायपुर के जिला समन्वयक श्री लच्छूराम निषाद ने बताया कि इन दिनों कोरोना संक्रमण के भय ने लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता का

- विशेषज्ञ परामर्शदाताओं के नम्बर ज़ारी किये।
- रायपुर में प्रतिदिन 200 व्यक्तियों के भोजन एवं 250 पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था होती है।

अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इसी भय के कारण लोग सामान्य-सी बीमारियों का भी सामना नहीं कर पा रहे। गायत्री परिवार ने ऐसे लोगों में मनोबल वृद्धि के लिए मनोवैज्ञानिक परामर्श दाता टोलियाँ बनाई हैं, जो मोबाइल पर लोगों की निःशुल्क सेवा कर रही हैं। टीम के सम्पर्क सूत्र हैं-डॉ. घनश्याम पटेल (एम.बी.बी.एस) 9977666751, गौरीशंकर सैनी शांतिकुंज हरिद्वार (प्राकृतिक चिकित्सा) 9258369571, प्राणेश विश्वास (यज्ञ चिकित्सा) 9755885711, रवि शास्त्री (एक्यूप्रेशर) 9399730846, विक्रम साहू (योग प्रशिक्षक) 9893652444 ।

रायपुर में ऑक्सीजन सेवाएँ देते परिजन

उपरोक्त सेवाओं के अतिरिक्त ज़रूरतमंद लोगों और बेजुबान आवारा पशुओं को भोजन देने का कार्य भी प्रारंभ किया गया है। रायपुर शहरी क्षेत्र में प्रतिदिन 200 व्यक्तियों को भोजन और 250 बेजुबान प्राणियों के लिये आहर गायत्री परिवार द्वारा प्रदान किया जा रहा है।

जिन्दादिली, उत्साह, माधुर्य, जोश, प्रेम और आत्मबल ही हमें जीने योग्य बनाते हैं।

कोविड-19 महामारी के समय गायत्री परिवार की बहुमुखी सक्रियता

बड़ा लालपुर, वाराणसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी ने कोरोनावायरस संक्रमण की दूसरी लहर के समय पीड़ित मानवता की भरपूर सेवा की है। ट्रस्ट ने 24 अप्रैल को विशेष आपदा प्रबन्धन वाहिनी का गठन किया और 26 अप्रैल से 5 मई तक के छोटे-से कालांश में ही उल्लेखनीय कार्य किये। ये सारी सेवाएँ निःशुल्क प्रदान की गईं।

पंडित गंगाधर उपाध्याय की अध्यक्षता में आपदा प्रबन्धन वाहिनी के सदस्य सर्वश्री सत्यप्रकाश गुप्ता, रमन कुमार श्रीवास्तव, रमेश कुमार सिंह, प्रवीण राय, अनूप कुमार सिंह, डॉ. जी.एस. दुबे, अनिलेश तिवारी, नवनीत सिंह, शिवम सिंह, धनंजय ओझा, श्यामानंद सिंह, घनश्याम राम, रजनीश मल्होत्रा, डॉ. भगवान दास एवं श्री लालबहादुर पटेल सेवाकार्यों को गति प्रदान कर रहे हैं।

प्रथम 10 दिन के सेवाकार्य

- 1300 टिफिन अस्पतालों में दिये गए।
- 645 टिफिन होम आइसोलेशन में रह रहे रोगियों को दिये।
- 22 ऑक्सीजन सिलेंडर उपलब्ध कराये।
- 548 मरीज़ों को दवाइयाँ दी गईं।
- 20 शवदाह के लिए लकड़ियाँ दी गईं।
- 250 घरों में प्रतिदिन ऑनलाइन यज्ञ कराये जा रहे हैं। 60 परिजन प्रतिदिन वातावरण शुद्धि हेतु विशेष औषधियों और मंत्रों के साथ गायत्री यज्ञ कर रहे हैं।
- 4 मई से निःशुल्क भोजन पैकेट एवं खाद्यान्न वितरण सेवाएँ आरम्भ की गईं।
- 5 मई से ज़ूम एप के माध्यम से कोरोना संक्रमितों की समस्याओं के समाधान का अभियान आरम्भ हुआ।
- मास्क एवं सेनिटाइजर वितरण कार्य भी।

वाराणसी : बीमारों को ऑक्सीजन, शवदाह के लिए लकडियाँ और ज़रूरतमंदों को भोजनदान

कई अस्पतालों में सहयोग और भोजन

इन्दौर। मध्य प्रदेश

मानवता पर छाये अपूर्व संकट की इस घड़ी में गायत्री शक्तिपीठ इन्दौर पूरी तत्परता के साथ लोगों की सेवा-सहायता में जुट गया है। दैनिक भोजन सेवा के अलावा इन्दौर शाखा ज़रूरतमंदों को एम्बुलैंस, ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर, ऑक्सीजन सिलेण्डर, प्लाज़्मा, बेड आदि उपलब्ध कराने में भी बढ़-चढ़कर सहयोग प्रदान कर रही है। इनमें युवा प्रकोष्ठ के सदस्य अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

श्री राजेश पटेल से प्राप्त जानकारी के अनुसार सेवाकार्यों के छठे दिन इन्दौर शाखा ने नगर के अर्पण नर्सिंग होम, कोठारी मार्केट, संपूर्ण सोडाणी डायग्नोसिस, क्योरवेल हॉस्पिटल, कोरल हॉस्पिटल, ग्रेटर कैलाश हॉस्पिटल, यूरेका हॉस्पिटल, आदि स्थानों पर ज़रूरतमंदों को भोजन प्रदान किया।

इन्दौर : विभिन्न क्षेत्रों में भोजन और पानी की व्यवस्था कर रहे परिजन

उपलब्ध कराई शुद्ध सात्विक भोजन सेवाएँ

मनासा, नीमच। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ मनासा कोविड संक्रमितों और जरूरतमंद गरीब, असहाय लोगों तक भोजन के पैकेट पहुँचा रही है। शक्तिपीठ को आर्थिक सहयोग जुटाने और पीड़ितों तक भोजन पहुँचाने में परिजनों का प्रशंसनीय सहयोग मिल रहा है।

महासमुन्द। छत्तीसगढ़

केटरिंग व्यवसायी श्री मुकेश श्रीवास्तव और क्लबपारा गायत्री मंदिर समिति 13 अप्रैल से ही कोविड-19 के रोगियों का उपचार कर रहे स्टाफ के लिए दोनों समय का भोजन पहुँचा रहा है। जब उन्होंने भोजन की तलाश में भटकते रोगियों के परिजनों की व्यथा देखी तो उन लोगों के लिए दोनों समय के लिए निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराना आरम्भ कर दिया।

जालौर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ जालौर ने कोरोना संक्रमितों और ज़रूरतमंदों तक शुद्ध, सात्विक भोजन पहुँचाने का बीड़ा उठाया है। सर्वश्री हनुमान सिंह राजपुरोहित, पवन कुमार, ओम नारायण मिश्रा, लीलावती राजपुरोहित आदि के अनेक परिवार इस पुनीत सेवाकार्य में पूरे मनोयोग से सक्रिय हैं। वे राज्य प्रशासन द्वारा निर्धारित सभी निर्देशों का पालन करते हुए ज़रूरतमंदों तक भोजन पहुँचा रहे हैं।

पटना। बिहार

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ पटना की युवा वाहिनी इन दिनों भी सदैव की भाँति कोविड संक्रमितों की सेवा में अग्रणी योगदान दे रही है। उनके द्वारा ज़रूरतमंदों को भोजन, काढ़ा, आवश्यक औषधियाँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

मेरठ। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार मेरठ द्वारा गढ़ रोड और उसके आसपास के क्षेत्रों में कोरोना संक्रमित लोगों हेतु निःशुल्क भोजन की सेवा प्रदान की जा रही है। स्थानीय कार्यकर्त्ता इस सेवा यज्ञ में पूरे उत्साह के साथ जुटे हैं। ज़रूरतमंदों के लाभार्थ उन्होंने हैल्पलाइन नम्बर भी जारी किया है, वह है-9897451413

हैदराबाद। तेलंगाना

अखिल विश्व गायत्री परिवार की तेलंगाना शाखा तेलंगाना इन्स्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ में कोरोना का उपचार करा रहे रोगियों और उनके परिचारकों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराने में जुटी हुई है। इसके अलावा भी यह केन्द्र अनेक प्रकार से लोगों की सेवा-सहायता कर रहा है।

मनासा (मध्य प्रदेश), पटना (बिहार) और हैदराबाद (तेलंगाना) में तैयार हो रहे भोजन पैकेट्स

अंतिम संस्कार के लिए आर्थिक अनुदान

मोडासा, अरवल्ली। गुजरात

कोरोना महामारी अनेक समस्याएँ लेकर आई है। अपनी जीवन लीला समाप्त करने वाले लोगों के परिवारी जनों के पास अंतिम संस्कार के लिए लकड़ियों तक की व्यवस्था नहीं है। लॉकडाउन की परिस्थितियों में उन ज़रूरतमंदों का संपर्क भी कठिन है।

गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा के संचालक श्री हरेश कंसारा के अनुसार ऐसे अज्ञात लोगों की सहायता के लिए लोगों से सहयोग का आह्वान किया गया। परिजनों

लकड़ियाँ भी भेजीं

ने बड़ी उदारता के साथ तीन दिनों में ही 1,25,000/- का अनुदान गायत्री चेतना केन्द्र को दिया। इस राशि का चेक मोडासा श्मशान में मृतात्माओ को अंतिम अग्नि संस्कार कराने में सहयोगी संस्था मोडासा महाजन मंडल को अर्पित कर दिया गया। इसके अलावा क्षेत्र के गाँवों में से जहाँ से भी संभव हुआ, परिजनों द्वारा लकडी के ट्रेक्टर भर कर श्मशान तक पहुँचाये जा रहे हैं।

ऑनलाइन संस्कार की सुविधा

झाँसी। उत्तर प्रदेश

अपनी सनातन संस्कृति में मरणोपरान्त श्राद्ध-तर्पण का विधि-विधान है। लेकिन आज की प्रतिकूल परिस्थितियों में जो दिवंगत हो रहे हैं, उनके लिए इस संस्कार विधि को पूरा करना आसान नहीं है। श्री गायत्री प्रज्ञापीठ, प्रेम नगर झाँसी ने ऐसे लोगों की सहायतार्थ ऑनलाइन निःशुल्क संस्कार कराने की व्यवस्था कर रखी है। हैल्पलाइन नम्बर (73988 13367) समाचार पत्रों में भी प्रकाशित कराए गए। उल्लेखनीय है कि गायत्री परिवार झाँसी केवल मरणोत्तर संस्कार ही नहीं, नामकरण, मुण्डन, जन्मदिवस, यज्ञादि सभी संस्कार ऑनलाइन सम्पन्न करा रहा है।

भोजन सेवाएँ भी

प्रज्ञापीठ के व्यवस्थापक श्री राजेन्द्र द्विवेदी ने बताया कि उनकी शाखा गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी मेडिकल कॉलेज, नर्सिंग होम में असहाय, ज़रूरतमंदों को भोजन उपलब्ध करा रही है।

संक्रमण से बचाव के उपाय किये

औषधीय भाप

शामगढ़, मंदसौर। मध्य प्रदेश

पीड़ा निवारण अभियान में प्राणपन से सक्रिय शामगढ़ शाखा ने असंक्रमित लोगों को संक्रमण से बचाने और उनकी जीवनी शक्ति बढ़ाने के लिए विशेष सेवाएँ प्रदान की हैं। वे लोगों को औषधियुक्त भाप लेने की सुविधा प्रदान कर रहे हैं।

मास्क वितरण

बण्डा, शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मस्थली बंडा द्वारा इन दिनों बड़ी संख्या में मास्क सिलकर बाँटे जा रहे हैं।

सीतापुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री चेतना केन्द्र सहसापुर द्वारा दोहरी परत वाले, संक्रमण से पूरी सुरक्षा देने वाले मास्क निःशुल्क बाँटे जा रहे हैं। ये गायत्री शक्तिपीठ कुर्सी रोड, लखनऊ द्वारा स्वावलंबन अभियान के अंतर्गत निर्मित हैं।

'सर्वजन सुखाय' की भावना एक लाख रुपये का अनुदान

साथ मिलकर संकट से लड़ने का आह्वान

भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

अपने साधन सम्पदा का जनहित के कार्यों में उपयोग करते रहने वाले गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता श्री राजमणि दुबे ने इस बार दारुल राहत कोविड सेण्टर सेक्टर-6 को एक लाख रुपये का अनुदान देकर पीड़ित मानवता के लिए समर्पित अपनी संवेदनाओं का शानदार परिचय दिया। कोविड सेण्टर प्रभारी अब्दुल कलाम, रजा हाजी ने उनकी उदारता की सराहना करते हुए कहा परम पूज्य गुरुदेव के उद्घोष 'मानव मात्र एक समान, नर और नारी एक समान, जाति-वंश सब एक समान' की सराहना की। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार उनके इस उद्घोष को चरितार्थ कर रहा है।

गायत्री परिवार की ओर से श्री मोहन उमरे ने वर्तमान परिस्थितियों को चुनौतीपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि कोरोना संकट का हम सबको साथ मिलकर सामना करना होगा।

रोगियों का मनोबल बढ़ाने निकली टोलियाँ

आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं और सूक्ष्म यज्ञ की सलाह दे रहे हैं परिजन

उज्जैन। मध्य प्रदेश

वर्तमान विषम परिस्थिति में उज्जैन शाखा के स्वयंसेवक कोरोना कंटेण्टमेण्ट जोन में जाकर न केवल पीड़ित परिवारों की सेवा में जुटे हैं, अपितु उनका हर प्रकार से मनोबल भी बढ़ा रहे हैं। वे बड़ी सावधानी और सुरक्षा के साथ पीड़ितों की समस्याओं और आवश्यकताओं की जानकारी लेकर उनकी अपने स्तर पर पूर्ति कर रहे हैं अथवा समस्याओं को प्रशासन तक पहुँचा रहे हैं।

गायत्री परिवार की यह टोली न केवल लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहयोग करती है, बल्कि रोगियों का मनोबल भी बढ़ा रही है। वे घर-घर सूक्ष्म यज्ञ के माध्यम से वातावरण को रोग संक्रमण मुक्त रखने तथा जीवनी शक्ति बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। डिप्टी कलेक्टर सुश्री कल्याणी पाण्डेय ने ऐसे 26 परिजनों की सेवाओं की सराहना की और उन्हें प्रशासन की ओर से स्वयंसेवक के आईडी कार्ड भी प्रदान किए।

माता भगवती की बाड़ी

वृक्षारोपण के लिए तैयार हैं 3000 विकसित पौधे

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश

पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण के लिए अपनी राष्ट्रीय पहचान बना चुकी बुरहानपुर की गोलोक धाम शाखा ने इस वर्ष 'माता भगवती की बाडी' योजना के अन्तर्गत 3000 पौधे तैयार कर लिए हैं। 3 फीट से लेकर 5 फीट तक के अनेक प्रजाति के इन पौधों को वर्षाकाल में उपयुक्त स्थानों पर रोपित किया जाएगा।

पर्यावरण संरक्षण के साथ हरीतिमा संवर्धन के अनुकरणीय प्रयास

पटियाला। पंजाब

लोगों में प्रकृति के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दृष्टि से पटियाला शाखा ने एक प्रशंसनीय कार्यक्रम चला रखा है- एक कदम प्रकृति की ओर। सुश्री नेहा गुप्ता के अनुसार नैष्ठिक कार्यकर्त्ता बेकार पड़ी प्लास्टिक और काँच की बोतलें, डिब्बे आदि एकत्रित करते हैं। उन्हें सुन्दर आकार में काटते हैं और आकर्षक गमले का रूप देकर उनमें स्नेक प्लांट, एलोवेरा, मनीप्लाण्ट जैसे पौधे लगाकर लोगों को उपलब्ध कराते हैं।

पटियाला शाखा के ये प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय हैं। ये आकर्षक पौधे एक ओर लोगों के घरों को सजा रहे हैं, वहीं जन-जन को प्रकृति के प्रति जागरूक होने का, हरीतिमा संवर्धन का मूक संदेश भी दे रहे हैं।

पशुओं की प्याऊ

नगर में रखवाये 51 बड़े जलपात्र

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर जी ने अपनी पुत्री के विवाह की खुशी में कई सामाजिक कार्य किए। इसी कड़ी में उन्होंने नगर में 51 स्थानों पर बड़े जलपात्र रखवाये हैं। यह जलपात्र गर्मी के दिनों में पशु-पक्षियों के लाभार्थ प्याऊ की तरह रखवाए गए हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय नर्स दिवस

आत्मीयता की अभिव्यक्ति एवं आभार प्रदर्शन

मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया, मुम्बई ने 12 मई को नायर हॉस्पिटल, मुम्बई में जाकर निष्काम प्रेम और भावसंवेदनाओं के साथ मानवमात्र की सेवा कर रही नर्स (सिस्टर्स) के बीच पहुँचकर विश्व नर्सिंग दिवस मनाया। इस अवसर पर एडवोकेट गायत्री नायक एवं डॉ. विक्रम कात्रे ने दीपयज्ञ कराया। उन्होंने मानवता की सेवा करते हुए अपनी जान गँवाने वाले सभी अभिभावकों के प्रति आत्मीयता, आभार एवं संवेदना का भाव व्यक्त करने के लिए प्रार्थनाएँ कीं।

सिस्टर सविता दरडे, प्रभारी ने कहा कि इस प्रकार की प्रार्थना हमें आंतरिक शान्ति और बल प्रदान करती है, तनाव कम करने और कठिन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति देती है। सिस्टर अल्बेना ने कहा कि निष्काम भाव से किया गया प्यार आपको ताकत देता है और अंतस् को सुकून देता है। सभी सिस्टर्स को युग साहित्य भेंट किया गया। गायत्री परिवार से मिले इस प्यार से सभी अभिभूत थे।

कोविड-19 संक्रमण रोधी वातावरण के लिए यज्ञ अभियान

पेण्ड्रा रोड। छत्तीसगढ़

3 मई को गायत्री परिवार महासमुन्द की युवा शाखा 'दिया' द्वारा कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान चलाया गया। जिला समन्वयक श्री हरि पटेल एवं दिया के जिला समन्वयक श्री ओम प्रकाश बलभद्र के अनुसार इस सामूहिक अनुष्ठान में क्षेत्र के कई संगठन जुड़े, 500 से भी अधिक लोगों ने भाग लिया। यज्ञों के प्रशिक्षण से लेकर यज्ञ संचालन के लिए ऑनलाइन कार्यक्रम हुए। इनमें ब्लॉक समन्वयक गोलवति उईके, रमेश नेताम, मुकेश जायसवाल, कु. खुशबू रठौर आदि ने अग्रणी भूमिका निभाई।

3 मई 500 घर

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

कोरोना संक्रमण के संकट के बीच भी अलीराजपुर जिले के कई गाँवों में प्रत्येक रविवार को गृहे-गृहे यज्ञ अभियान पूरे उत्साह के साथ चल रहा है। इनके माध्यम से घर-घर को संक्रमण रहित करने और हर व्यक्ति की जीवनी शक्ति बढ़ाने के प्रयास भी किये जा रहे हैं। निरंतर सक्रियता से घर-घर यज्ञ पुरोहित तैयार हो गए हैं और वे स्वतः ही पूरी सादगी और भक्तिभाव के साथ यज्ञ सम्पन्न कर लेते हैं।

जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा के अनुसार 9 मई 2021, रविवार को अलीराजपुर जिले के 316 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुए हैं। अलीराजपुर के 97, नानपुर के 11, जोबट के 86, बोरी के 18, उदयगढ़ के 11, भाबरा के 7, कट्ठीवाडा के 12 और सोंडवा के 74 घरों में यज्ञ हुए।

9 मई 316 घर

खाचरोद, उज्जैन। मध्य प्रदेश

हनुमान जयन्ती-27 अप्रैल के दिन खाचरोद के लगभग 200 घरों में सामूहिक प्रार्थना के साथ एक ही समय पर यज्ञ हुआ। खाचरोद में अपनी तरह का यह तीसरा आयोजन था। उल्लेखनीय है कि इस कस्बे के सैकड़ों लोग स्वयं यज्ञ करने में प्रशिक्षित होते हैं, घर-घर यज्ञ के सामूहिक कार्यक्रमों की परम्परा चल पड़ी है।

27 अप्रैल 200 घर

छत्तीसगढ़ में जप-यज्ञ का सामूहिक प्रयोग

डेढ़ लाख लोगों ने भाग लिया

रायपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार छत्तीसगढ़ के जोन समन्वयक श्री दिलीप पाणीग्रही ने बताया कि वैश्विक स्तर पर फैली कोरोना वायरस की महामारी के निवारण हेतु 2 मई की प्रातः से 3 मई की प्रातः तक 24 घण्टे का अखण्ड जप और उसकी पूर्णाहुति स्वरूप गायत्री यज्ञ का अभियान चलाया गया था। यह कार्यक्रम लगभग डेढ़ लाख घरों में हुआ। सभी परिवारों ने अपने-अपने घर ही जप और यज्ञ किये।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस विराट सामूहिक यज्ञ एवं प्रार्थना प्रयोग की सफलता के लिए बधाई दी। उन्होंने छत्तीसगढ़ की आपदा प्रबन्धन वाहिनियों को जरुरतमंदों तक ऑक्सीजन पहुँचाने, निशुल्क मनोवैज्ञानिक परामर्श देने, निशुल्क भोजन एवं दवाओं का वितरण करने जैसे लोकमंगल के कार्यों को गति देने में जुटे कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए भावी मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

यज्ञ से पूरा गाँव सेनिटाइज़ किया

बड़वानी। मध्य प्रदेश

ग्राम चितावर में गायत्री परिवार और बजरंग दल ने मिलकर यज्ञ कोविड संक्रमण से बचाव के लिए गाय के घी और विशिष्ट, हवन सामग्री तथा गूगल के माध्यम से यज्ञ किया। यज्ञकुण्ड को पूरे गाँव में घुमाकर यज्ञधूम्र को फैलाया गया। पूरी यात्रा में विशिष्ट हवन सामग्री की आहुतियाँ दी जाती रहीं और गायत्री मंत्र और हनुमान चालीसा का उच्चारण भी किया जाता रहा। इस प्रयोग को विषाणु नाशक एवं जीवनी शक्तिवर्धक बताया गया।

हवन सामग्री के घटक

अगर, तगर, गिलोय, तुलसी, जटामासी, हाऊ बेर, नीम की पत्ती, नीम की छाल, कालमेध, जायफल, जावित्री, आज्ञा घास, कड़वी बच, नागर मोथा, सुगंध बाला, लौंग, भीमसेनी कपूर, देवदारू, शीतल चीनी, सफेद चंदन, दारू हल्दी आदि।

युवा प्रकोष्ठ बड़वानी के संवाददाता श्री लखन विश्वकर्मा ने बताया कि यह प्रयोग 26 मई को गृहे-गृहे यज्ञ कार्यक्रम के साथ पुनः दोहराया जायेगा।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

> मृत्यु जीवन यात्रा का एक पड़ाव मात्र है। जो भगवान के साथ साझेदारी करते हैं, वे निश्चित ही सद्गति प्राप्त करते हैं।
> - डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

इन दिनों सारा देश कोरोना महामारी के कठिन दौर से गुज़र रहा है। विगत दिनों अखिल विश्व गायत्री परिवार की बहुत-सी देवात्माओं को भी इस महामारी ने अपनी चपेट में लिया। इस बीच कुछ परिजन कोरोना संक्रमण से दिवंगत हुए, कुछ अन्य कारणों से। अखिल विश्व गायत्री परिवार उन सभी को अपनी भावभरी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान दें, उनके परिवारी जनों को इस वियोग को सहने की शक्ति प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना।

श्री जयप्रकाश ठाकरे, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। उत्तराखण्ड

शान्तिकुञ्ज के दिव्य प्रांगण में और ऋषियुग्म के दिव्य प्रांगण में पले, बढ़े और सेवारत रहे श्री जयप्रकाश ठाकरे का दिनांक 5 मई 2021 को देहावसान हो गया। वे शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री उदयराम ठाकरे के सुपुत्र थे। इन दिनों वे दिल्ली में सेवारत थे।

श्री मदनलाल खंडेलवाल, अजंदी, बड़वानी। मध्य प्रदेश

श्री मदनलाल खंडेलवाल का दिनांक 5 मई को निधन हो गया। जिले में गो-यात्राओं के संचालन में उनका विशेष योगदान रहा। उन्हें उनके सेवाकार्यों के लिए शान्तिकुञ्ज में सम्मानित भी किया गया था।

श्री शिव कुमार बेरीवाल, रायगढ़। छत्तीसगढ़

बिलासपुर एवं अमरकंटक शक्तिपीठों के ट्रस्टी एवं वरिष्ठ अधिवक्ता श्री शिव कुमार बेरीवाल का लम्बी बीमारी के बाद 75 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उन्होंने पाँच दशकों तक मिशन की सेवा की।

श्री अवधेश कुमार सिंह, शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार शाहजहाँपुर के जिला समन्वयक श्री अवधेश कुमार सिंह का 29 अप्रैल 2021 को निधन हो गया। वे सन्1979 से मिशन में जुड़े और मिशन की सेवा में अहर्निश सक्रिय रहे।

डॉ. चित्रा नाग, मुजगहन, धमतरी। छत्तीसगढ

अत्यंत प्राणवान कार्यकर्त्ता डॉ. चित्रा नाग का 9 मई को देहावसान हो गया। वे योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ थीं, गायत्री आरोग्यम पॉली क्लीनिक में सेवाएँ प्रदान करती थीं।

श्री पूरण सिंह रघुवंशी, शिवपुरी। मध्य प्रदेश

जिनकी प्रेरणा से अनेक व्यक्ति व्यसनमुक्त हो गये, वे प्रखर साधक श्री पूरण सिंह रघुवंशी का 7 मई 2021 को निधन हो गया। शक्तिपीठ शिवपुरी के संचालन व शक्तिपीठ कोलारस की स्थापना में उनका योगदान रहा।

पं. कँवरलाल शर्मा, खिलचीपुर, राजगढ़। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर के परिव्राजक ग्राम बावड़ी खेड़ा निवासी पं. कँवरलाल शर्मा का 27 अप्रैल 2021 को निधन हो गया। उनके भक्तिभाव से प्रभावित होकर शक्तिपीठ पर आरती में दूर-दूर के गाँवों से लोग आते थे, पूरा शक्तिपीठ प्रांगण भर जाता था।

श्री मानसिंह सिनसिनवार, कठूमर, अलवर। राजस्थान

विगत 25 वर्षों से मोटरसाइकिल यात्राओं व अन्य कार्यक्रमों से आसपास के गाँवों में जनजागरण अभियान चला रहे ग्राम बींजला, तहसील कठूमर निवासी कार्यकर्त्ता श्री मान सिंह सिनसिनवार का दिनांक 5 मई 2021 को निधन हो गया।

श्रीमती सुशीला देवी, बलिया। उत्तर प्रदेश

श्रीमती सुशीला देवी, पत्नी श्री हंस कुमार का 14 अप्रैल को 65 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। उन्होंने नगर के सभी 25 वॉर्ड में महिला मंडल की स्थापना की, अनेक बहिनों से झोला पुस्तकालय चलवाती थीं।

श्रीमती राजलक्ष्मी सिंह, वाराणसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी की ट्रस्टी श्रीमती राजलक्ष्मी सिंह का कोरोना संक्रमण के चलते 25 अप्रैल 2021 को निधन हो गया।

श्री सुदामा पाटीदार, मनावर, धार। मध्य प्रदेश

मनावर शक्तिपीठ के ट्रस्टी अत्यंत प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री सुदामा पाटीदार का दिनांक 1 मई 2021 को देहावसान हो गया।

श्री उमेश गजरे, खत्तलवाड़ा, वलसाड़। गुजरात

गायत्री शक्तिपीठ खत्तलवाड़ा की नींव के पत्थर श्री उमेश गजरे का 3 मई 2021 को देहान्त हो गया।

किसानों के लिए कृषिभूमि में सुरक्षित सिंचाई हेतु खेत तालाब ही हैं सर्वश्रेष्ठ विकल्प

भारत में निरन्तर कम होती हरियाली, बढ़ते प्रदूषण और पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से वर्षा की अनियमितता बढ़ती ही जा रही है। परिणाम स्वरूप देश का हर क्षेत्र प्रभावित हो रहा है। कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे का सामना करना पड़ रहा है। इससे भी बड़ी समस्या है वर्षाजल का सही-सही प्रबन्धन न होना। जो जल बरसता है वह नदी-नालों से होकर समुद्र तक पहुँच जाता है। वह धरती में समा ही नहीं पाता।

परिणाम स्पष्ट है। किसान नलकूपों पर आश्रित हैं। अत्यधिक जल के दोहन से जल स्तर दिन-प्रतिदिन नीचे गिरता जा रहा है। नलकूप स्थापन पर अत्यधिक राशि व्यय करने के उपरांत भी यह निश्चित नहीं है कि समय पर आवश्यकतानुसार पर्याप्त पानी मिलेगा या नहीं। संशय की स्थिति में किसान के पास एक मात्र विकल्प है कि खेत तालाब का निर्माण करें। खेत-तालाब का निर्माण कृषकों की भूमि पर सुरक्षात्मक सिंचाई के प्रबंधन एवं भूजल संवर्धन हेतु जल-संग्रहण संरचना के निर्माण के उद्देश्य से किया जाता है। जिससे कम बारिश में भी उनकी फसल का बचाव सुनिश्चित किया जा सके।

खेत तालाब : कम लागत, अधिक लाभ

1 हेक्टेयर खेत के 5 प्रतिशत हिस्से (500 वर्गमीटर) में 3 मीटर की गहराई का खेत-तालाब बनाते हैं तो मौटे तौर पर हमारे पास 1500 घनमीटर पानी उपलब्ध रहता है। यदि खेत में किसी फसल को एक बार में 5 से.मी. पानी देने की आवश्यकता है, तो उस फसल को हम लगभग 3 बार पानी दे सकते हैं। यदि तालाब दो गुने अर्थात् 10 प्रतिशत हिस्से में हो तो उससे छः बार सिंचाई की जा सकती है।

खेत के 5% भाग पर बने तालाब से लगभग तीन बार और 10% भाग पर बने तालाब से लगभग छः बार सिंचाई की जा सकती है।

वर्षा का पानी जहाँ गिरे, उसे वहीं रोकें

आलेख : श्री योगेन्द्र गिरि, जल संरक्षण विशेषज्ञ ग्राम प्रबन्धन संकाय सदस्य, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

1 मई 2021 के अंक में पृष्ठ 6 पर वर्तमान युग के जल संकट और वर्षाजल संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए बताया गया था कि आज भी जल की कमी नहीं है, अभाव जल का सही प्रबन्धन न होने के कारण है। गत अंक में छतीय जल संरक्षण विधि बताई गई थी। प्रस्तुत है सतही जल संरक्षण विधियाँ।

खेत तालाब का प्रारूप

खेत तालाब निर्माण की तकनीकी जानकारी

- क्षेत्रीय भौगोलिक परिस्थियों को ध्यान में रखते हुए आवश्यक तकनीकी मापदण्डों के आधार पर खेत तालाब का निर्माण किया जाना चाहिए।
- तालाब निर्माण के लिए सर्वप्रथम उपयुक्त स्थान का चयन किया जाना आवश्यक है। सिंचाई के लिए कितनी मात्रा में पानी की आवश्यकता होगी, इसकी गणना करने के उपरांत तालाब के आकार-प्रकार का निर्धारण किया जाना चाहिए।
- तालाब निर्माण स्थल की सफाई अवश्य करवाएँ। स्थल पर लगी घास व झाड़ियाँ जड़ सहित निकालकर अच्छी तरह से सफाई करा ली जानी चाहिए।
- तालाब की पाल (बाँध, मेंड़) के आधार में जगह-जगह छोटे-छोटे गड्ढे बना दिए जाने चाहिए, जिससे पाल निर्माण हेतु डाली जाने वाली मिट्टी की जमीन से अच्छी तरह पकड़ हो सके।
- मुरम वाले क्षेत्रों में जल रिसाव रोकने के लिए नींव/पड़ल भरी जाना नितांत आवश्यक है अन्यथा पानी नीचे से निकल जाएगा। यदि ट्रैक्टर से दबाई की जाती है तो 3 से 4 इंच मोटाई की परत में मिट्टी पाल पर परत दर परत डालकर बिछाई जाए।
- निर्माण में खुदाई से प्राप्त मिट्टी सीधे ही पाल पर नहीं डाली जाय, अपितु खुदाई में प्राप्त मिट्टी के ढेलों को अच्छी तरह तोड़कर बारीक कर ली जाय।
- तालाब की पाल की ऊपरी चौड़ाई कम से कम 2 मीटर रखी जाय तथा मिट्टी की ढलान 2: 1 रखा जाए।
- तालाब निर्माण में पाल की भीतर की ओर अच्छी मिट्टी (ऐसी मिट्टी जिससे पानी कम से कम रिसे) तथा बाहरी परत (लगभग 30 से 60 से.मी. मोटाई की) मुरम अथवा कंकरीली मिट्टी द्वारा बनाई जाना आवश्यक है।
- तालाब के जलभराव वाले हिस्से में पाल के एकदम नजदीक से मिट्टी नहीं खोदी जानी चाहिए।
- तालाब में जिस ओर पानी भरेगा उस ओर की पाल के ढलान पर पिंचिंग (पत्थर जमाव) कराई जानी आवश्यक है।
- तालाब में अतिरिक्त पानी के निकास की पर्याप्त व्यवस्था रखी जाय। स्थानीय इंजीनियर से संपर्क कर निकास द्वार की चैड़ाई की गणना करा ली जाय।
- तालाब में पूरी क्षमता से भरा हुआ पानी पाल से कम से कम 3 फीट नीचे ही होना चाहिए।
- तालाब के नीचे की ओर पाल के किनारे घास, रतनजोत के पौधे का रोपण या उद्यानिकी स्थापना की जा सकती है, जिससे पाल की मिट्टी को मजबूती प्राप्त होती है एवं पौधों की जड़ें काफी छोटी होने के कारण पाल को कोई खतरा भी नहीं होगा बल्कि किसान को आने वाले समय में इससे अतिरिक्त आमदनी ही होगी।
- पाल हेतु डाली गई मिट्टी की दबाई नहीं की जाने की स्थिति में पाल की ऊँचाई सामान्य से अधिक (25 प्रतिशत अधिक) रखी जाय। एक या दो वर्षा के पश्चात् मिट्टी अपने आप दबकर कम हो जाएगी एवं पाल की निर्धारित ऊँचाई रह जाएगी।
- उपरोक्त सावधानियाँ एवं सुझावों का पालन करने से कृषक द्वारा निर्मित किए गए तालाब सुरक्षित रहेंगे। साथ ही लंबे समय तक उनसे लाभ प्राप्त होता रहेगा। इससे जल का संरक्षण होगा तथा तालाब के नीचे की ओर भूमिगत कुएँ व नलकूपों के जलस्तर में वृद्धि होगी।

आज की समझदारी से थम जायेगा पहाड़ी, नदी, नालों में बहता जल, तो सुखद और सुनहरा होगा कल

जनमत तैयार कर सामूहिक प्रयासों से जलसंचय के लिए कई प्रकार की संरचनाओं का निर्माण किया जा सकता है

पठारी खाइयोंमें बनीं गली प्लग संरचनाएँ

परकोलेशन टेंक

वानस्पतिक अवरोध/बुश वुड चेकडेम

बोरी बंधान

गली प्लग

जिन पहाड़ियों पर ढलान ज्यादा होती है वहाँ वर्षाजल के बहाव से गलियाँ (नालियाँ) निर्मित हो जाती हैं। इन्हें गली की गहराई एवं चैड़ाई के अनुसार स्थानीय पत्थरों के द्वारा स्थान-स्थान पर शृंखलाबद्ध बाँधा जाता है। इससे वर्षा जल के बहाव की गति कम होती हैं एवं मिट्टी, जल तथा नमी का संरक्षण होता है।

परकोलेशन टैंक

परकोलेशन टैंक वास्तव में तालाबों का ही एक विशेष प्रकार है, जिसमें बरसात के बहते पानी को इकट्ठा किया जाता है। इन तालाबों में इकट्ठा हुआ पानी उनकी तली से धीरे-धीरे रिसकर जमीन के नीचे की परतों में भरता है। जमीन के नीचे की परतों में भरता हुआ पानी भूजल के स्तर को उपर उठाता है और भूजल भंडारों को और अधिक समृद्ध कर ज्यादा उपयोगी बनाता है।

वानस्पतिक अवरोध/ बुश वुड चेकडेम

भू-क्षरण रोकने का एक अन्य उपाय वानस्पतिक अवरोध बनाना है। इसके अन्तर्गत घास, फलदार एवं झाड़ीदार पौधों को इस प्रकार एक-दूसरे के पास रोपा जाता है, जिससे वे पानी के बहाव की गति को कम करते हुए मृदा को जमने हेतु रोक सकें।

बुश वुड चेकडेम का निर्माण दो लूज़ बोल्डर स्ट्रक्चर के मध्य बाँस-बल्लियों की संरचना से अवरोध तैयार किया जाता है।

बोरी बंधान

यूरिया/खाद अथवा सीमेण्ट की जूट/प्लास्टिक आदि की खाली बोरियों में मिट्टी अथवा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री को भर कर उनसे यह बोरी बंधान बनाया जाता है। उन्हें नदी-नालों में प्रवाह को काटते हुए बहुत ही व्यवस्थित ढंग से ईंट की जुड़ाई की तरह रखा जाता है। पानी रोकने की यह संरचनाएँ बहुत ही कम लागत में बनाई जा सकती हैं। गाँव में बहने वाले छोटे-छोटे नालों के लिए, जिनका क्षेत्र 0.1 वर्ग मील से लेकर 4 या 5 वर्ग मील तक हो सकता है, वहाँ के लिए बोरी बंधान बहुत उपयुक्त हैं।

गेबियन संरचना

लूज बोल्डर चेक की तरह यह भी एकत्रित किये गये बोल्डर द्वारा बनाया जाता है। इस संरचना में पत्थरों को तार की जाली में बांध कर रखते हैं, जिससे पत्थरों के पानी के साथ बहने की संभावना समाप्त हो जाती है। यह आकार में **लूज बोल्डर से** बड़े होते हैं, तथा इसके ऊपरी हिस्से में पानी का संग्रह अधिक होता है।

खेत के चारों और नाली द्वारा भू-जल संवर्धन

खेत की मेंढ़ के चारों ओर गहरी नाली अथवा खाई बनाकर भी खेतों में भूजल संवर्धन किया जा सकता है। स्थानीय भौगोलिक परिस्थिति के अनुरूप इस नाली को ढाल के अनुसार बनाई जाये, जिससे पानी इस खाई में ही भरा रहे और जमीन में धीरे-धीरे रिसता रहे। उसका उपयोग आने-जाने के लिये पुलिया के रूप भी किया जा सकता है।

तालाब निर्माण

जल संग्रहण के भण्डारण के लिए तालाब का निर्माण अति आवश्यक है, जिससे कि क्षेत्र की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा भूमिगत जल रिसाव बढ़े एवं जल का समुचित भण्डारण हो। जमीन की उपलब्धता के अनुसार छोटे से लेकर बड़े-बड़े आकार के तालाब बनाए जा सकते हैं।

सोक पिट

यह संरचना घरों के आसपास या खुली जगह पर पानी रोकने हेतु बनाई जा सकती हैं। इस संरचना को परकोलेशन पिट अथवा सोखता गड्ढा भी कहते हैं। इस गढ्ढे के आकार-प्रकार का निर्धारण स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार (गोल, चौकोर अथवा किसी अन्य आकार) कर सकते हैं। सामान्यतः इन सोक पिटों की लम्बाई, चैड़ाई और गहराई लगभग तीन-तीन मीटर रखी जा सकती है। जलप्रवाह की दिशा में खेत के निचले क्षेत्र से ऊपरी क्षेत्र तक भी कई पिट बनाए जा सकते हैं।

गेबियन संरचना

खेत के चारों ओर बनीं गहरी नालियाँ

गाँवों की खाली जमीन पर तालाब निर्माण

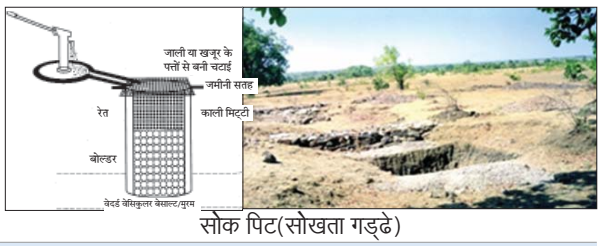

सोक पिट(सोखता गड्ढे)

संसार का सबसे बड़ा बल, आत्मबल गायत्री साधक को प्राप्त होता है।

पीड़ा निवारण में जुटें, हम लोगों के कान और कंधा बनें : डॉ. चिन्मय पण्ड्या

जयपुर। राजस्थान

दिनांक 9 मई को अखिल विश्व गायत्री परिवार के राजस्थान ज़ोन ने ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया। इसके मुख्य वक्ता देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि गायत्री परिवार का उद्देश्य ही पीड़ा और पतन निवारण है। कोरोना महामारी की इस घड़ी में आज हर परिवार तकलीफ में है। हम सबको लोगों के कान और कंधे बनाना है। जो भी अपने आप को गायत्री परिवार का सदस्य अनुभव करते हैं या मानते हैं, उन प्रत्येक व्यक्ति को पीड़ित मानवता की सेवा के लिए आगे आना चाहिए। कान और कंधे बनने से डॉ. चिन्मय जी का तात्पर्य था कि हम दूसरों का दुःख-दर्द सुनें और उनका सहारा बनें, भले ही वे किसी भी वर्ग के हों। पीड़ित व्यक्ति का दुःख-दर्द सुन लिया जाय तो आधा दुःख तो वहीं दूर हो जाता है।

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि जो लोग किसी परेशानी में नहीं है, हमें उनके जीवन का भी नवीनीकरण करना है। उनके चिंतन और दृष्टिकोण को और बेहतर बनाने के कार्य में जुटना है। परिस्थितियों को बदलना हमारे हाथ में नहीं है, लेकिन लोगों की मनः स्थिति बदलने के प्रयास तो किए जा सकते हैं।

यह संगोष्ठी जयपुर और शान्तिकुञ्ज से संचालित हुई। प्रदेश के लगभग 900 कार्यकर्ता इससे जुड़े। डॉ. चिन्मय जी ने अपने परिजनों को भविष्य के लिए जिम्मेदार नागरिक तैयार करने की दिशा में भी कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

राजस्थान जोन की वर्चुअल संगोष्ठी

डॉ. ओम प्रकाश शर्मा, जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने यज्ञ को चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रचलित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि समग्र स्वास्थ्य के लिए योग और यज्ञोपैथी से बढ़कर सस्ता और सुलभ उपाय कोई दूसरा नहीं है। इसलिए लोगों को विशिष्ट हवन सामग्री के साथ प्रतिदिन हवन करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। साथ ही लोगों को आसन-प्राणायाम का अभ्यास करवाया जाना चाहिए।

आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी अभियान की प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. गायत्री शर्मा ने भविष्य की श्रेष्ठ संतानों के लिए पुंसवन संस्कार पर जोर देते हुए कहा कि गृहे-गृहे यज्ञ के साथ घर-घर में संस्कार की परम्परा को चलाने की आवश्यकता है। यह कार्य ऑनलाइन भी संभव है।

राजस्थान जोन प्रभारी श्री जय सिंह यादव ने राजस्थान में गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी और सबके सहयोग-सक्रियता के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रारंभ में शान्तिकुञ्ज से मंच संचालन करते हुए श्री गोपाल शर्मा ने कहा कि लॉकडाउन में मोबाइल को क्रांति का हथियार बनाएँ। मिशन के विभिन्न आन्दोलनों को जन-जन तक पहुँचायें। गायत्री परिवार की वेबसाइट, एप, यू-ट्यूब का न केवल स्वयं लाभ उठाए, वरन जन-जन को भी इससे लाभान्वित करें। शान्तिकुञ्ज के युवा उद्गाता बंधुओं ने मुसीबत कितनी ही आए, नाम मत रुकने का लेना..., हे प्रभु अपनी कृपा की छाँह में ले लीजिए... प्रज्ञागीत के माध्यम से भाव संवेदन का जागरण किया।

इस संगोष्ठी में राजस्थान के जिला, तहसील, उपखण्ड, जोन, स्तर पर समितियाँ गठित करने तथा उनके हेल्पलाइन नंबर जारी करने का निर्णय लिया गया। इन समितियों के माध्यम से परस्पर समन्वय होगा और लोगों की 24 घंटे मदद की जा सकेगी। हॉस्पिटल में बेड, ऑक्सीजन, दवा, प्लाज्मा से जुड़ी जानकारियाँ उपलब्ध कराई जा सकेंगी।

रेडियो दस्तक पर सुन्दरकाण्ड पाठ

हज़ारों कोरोना संक्रमित और शुभेच्छक भागीदार बने

उज्जैन। मध्य प्रदेश

हनुमान चालीसा और सुन्दरकाण्ड का पाठ विपत्तियों का नाश करने वाला है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए गायत्री परिवार के अनुरोध पर स्थानीय रेडियो दस्तक ने सुन्दरकाण्ड का प्रसारण किया। यह प्रसारण हनुमान जयन्ती की संध्या पर कोरोना संकट के निवारण की कामना और प्रार्थना के साथ हुआ।

देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव के अनुसार 30 किलोमीटर क्षेत्र में हज़ारों लोगों ने इसके साथ जुड़कर सामूहिक सुन्दरकाण्ड पाठ में भाग लिया। मुख्यतः कोविड सेंटर, चिकित्सालय में भर्ती मरीज़ों ने अपने मोबाइल आदि से सुनकर प्रार्थना में भागीदारी की। यह प्रार्थना उनके आत्मबल और सकारात्मक सोच को बढ़ाने वाली थी। गायत्री परिवार ने इस संक्रमण काल में कोरोना वारियर्स के रूप में अपना तन, मन, धन समर्पित कर सेवा भाव से पीड़ितों का अवलंबन बन सकें, ऐसी प्रार्थना विघ्न विनाशक पवनपुत्र हनुमान से की। रेडियो दस्तक के निदेशक श्री संदीप कुलश्रेष्ठ इस आपदा के निवारण के लिए गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे प्रयासों में भागीदारी को अपना सौभाग्य बताया।

प्रवेश प्रारम्भ

www.dsvv.ac.in

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रत्यायित एवं आईएसओ 9001:2015 द्वारा प्रमाणित

स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम — 3 वर्ष

01. बी एस-सी (गणित) ऑनर्स
02. बी एस-सी (योग विज्ञान) ऑनर्स
03. बी एस-सी (पर्यावरण विज्ञान) ऑनर्स
04. बी ए (संस्कृत) ऑनर्स
05. बी ए (हिन्दी) ऑनर्स
06. बी ए (अंग्रेजी) ऑनर्स
07. बी ए (इतिहास) ऑनर्स
08. बी ए (मनोविज्ञान) ऑनर्स
09. बी ए (संगीत) ऑनर्स
10. बी एस-सी (इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी)
11. बी वोक (3डी एनीमेशन एंड वी एफ़ एक्स)
12. बी सी ए (बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन)
13. बी ए (पत्रकारिता एवं जनसंचार)
14. बी बी ए (टूरिज्म एण्ड ट्रेव्हल मैनेजमेन्ट)
15. बी आर एस (बैचलर ऑफ रूरल स्टडीज)

बी एड (बैचलर ऑफ एजूकेशन) — 2 वर्ष

प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम — 6 माह

1. धर्म विज्ञान
2. योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा
3. समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन

डिप्लोमा पाठ्यक्रम — 1 वर्ष

1. डिप्लोमा - विजुअल इफेक्ट्स (कम्पोज़िटिंग)
2. पी. जी. डिप्लोमा - मानव चेतना, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा
3. पी. जी. डिप्लोमा - धर्म विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श

@dsvvofficial
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya

स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम — 2 वर्ष

1. एम ए/ एम एस-सी (नैदानिक मनोविज्ञान)
2. एम ए/ एम एस-सी (मानव चेतना एवं योग विज्ञान)
3. एम ए/ एम एस-सी (व्यावहारिक योग एवं मानव उत्कर्ष)
4. एम एस-सी (पर्यावरण विज्ञान)
5. एम एस-सी (एप्लाइड मेडिसिनल एवं एरोमेटिक प्लान्ट साइन्सेज)
6. एम एस-सी (योग विज्ञान)
7. एम सी ए (मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन)
8. एम बी ए (पर्यटन प्रबंधन)
9. एम ए (व्यावहारिक शिक्षा)
10. एम ए (पत्रकारिता एवं संचार अध्ययन)
11. एम ए (इतिहास एवं भारतीय संस्कृति)
12. एम ए (संस्कृत)
13. एम ए (हिन्दी)
14. एम ए (संगीत-गायन)
15. एम ए (संगीत-तबला, पखावज)

विवरण पुस्तिका / आवेदन फार्म हेतु

ऑनलाइन आवेदन - www.dsvv.ac.in (रु.1000/-)
ऑफलाइन आवेदन - वेबसाइट से आवेदन पत्रक डाउनलोड करें एवं आवेदन पत्र भरकर डाक द्वारा भेजें (रु. 1000/-) अथवा विश्वविद्यालय के काउन्टर से प्राप्त करें अथवा डाक से DD ड्राफ्ट के द्वारा मंगवाएँ। ड्राफ्ट देव संस्कृति विश्वविद्यालय के नाम हरिद्वार में देय होगा।

प्रत्येक आवेदक एक ही पाठ्यक्रम के लिए आवेदन कर सकता है, बी एड के अतिरिक्त।

प्रवेश परीक्षा के केन्द्र

- भोपाल (म.प्र.)
- हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
- कोलकाता (प.बंगाल)
- लखनऊ (उ.प्र.)
- नागपुर (महाराष्ट्र)
- नोएडा (उ.प्र.)
- पटना (बिहार)
- राजनाँदगाँव (छ.ग.)

आवेदन हेतु स्कैन करें

बी.एड. एवं प्रमाण पत्र कार्यक्रम के लिए मात्र हरिद्वार ही केन्द्र है।

कुलसचिव
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) - 249411
दूरभाषः (01334) 261367 (Ext. : 5407, 5524) • Web: www.dsvv.ac.in • Email: admissions@dsvv.ac.in
मोबाइलः +91-9258360763, 9258369877, 9258369615, 9258369611, 9258369612, 9720107192, 9258065555

संकट की घड़ी में हम साथ हैं

अपनी आवश्यकता और व्यथा-वेदना से हमें अवश्य अवगत करायें

सभी गायत्री परिजन अवगत हैं कि इन दिनों अपना देश एक अत्यन्त ही दारुण परीक्षा की घड़ी से गुजर रहा है। कोरोना के संक्रमण के प्रहार से शायद ही कोई अप्रभावित दिखाई पड़ता हो। जो स्वयं सुरक्षित रहे हैं तो वे दूसरों की पीड़ा को अनुभव करके उसी मर्मान्तक वेदना से गुजर रहे हैं। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी ने अपने गायत्री परिवार का लक्ष्य 'पीड़ा व पतन निवारण' ही बताया था और ऐसी विषम वेला में शान्तिकुञ्ज, गायत्रीतीर्थ एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय अपने भाई-बहिनों की वेदना को साझा करने के लिए कृत संकल्पित है। ऐसे अनेकों परिजन हैं जो इस वेला में किसी सहायता की आवश्यकता अनुभव करते हों। वे अपनी व्यथा-परेशानी निम्नांकित नम्बरों पर प्रदान कर सकते हैं। संभव है हम अपेक्षित सहायता त्वरित रूप से उपलब्ध न भी करा पाएँ, पर इतना विश्वास है कि हम आपके कष्ट को साझा करने का पुरजोर प्रयत्न अवश्य करेंगे।

+91-9258369615, +91-9258369877, +91-9258369859,
+91-9819151698, +91-9258360606,

देव संस्कृति विश्वविद्यालय
www.dsvv.ac.in

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज
www. awgp.org

शान्तिकुञ्ज समाचार

देवप्रयाग में बादल फटने से हुई तबाही

100 से अधिक परिवारों के लिए सहायता लेकर पहुँचा शान्तिकुञ्ज का आपदा प्रबन्धन दल

11 मई को देवप्रयाग के थाना क्षेत्र शांति बाजार एवं बौंठ गांव में बादल फटने से भारी मात्रा में आये मलबा ने तबाही मचाई। इससे अनेक परिवार, घर एवं दुकान को काफी नुकसान पहुंचा है। कई परिवार बेघर हो गये हैं।

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज ने अपना सेवाधर्म निभाते हुए पीड़ितों की सहायतार्थ सामग्री लेकर एक नौ सदस्यीय आपदा प्रबन्धन दल अविलम्ब देव प्रयाग के लिए रवाना कर दिया। यह नौ सदस्यीय राहत दल दल राशन कीट, कपड़े और जीवन रक्षक दवाइयाँ आदि सामान लेकर देवप्रयाग पहुँचा।

एक मिनी ट्रक में राहत सामग्री रवाना की गई है। इसमें सौ किट राशन (चावल, आटा, दाल, तेल, चीनी, मसाला, दूध पावडर, चायपत्ती) और उसके साथ त्रिपाल, कंबल एवं नये कपड़े भेजे गए हैं। वे जीवन रक्षक दवाइयाँ तथा सेनेटाइजर, मास्क भी लेकर गए हैं।

शान्तिकुञ्ज से दल को रवाना करते वरिष्ठ कार्यकर्त्ता

राहत सामग्री
राशन
(चावल, आटा, दाल, तेल, चीनी, मसाला, दूध पावडर, चायपत्ती)
त्रिपाल, कंबल,
नये कपड़े
जीवन रक्षक दवाएँ
सेनेटाइजर,
मास्क

अपनी गुरुसत्ता की बताई महान परम्पराओं को सदैव निभायेंगे

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी ने श्री नरेन्द्र ठाकुर एवं श्री अरुण तोमर के नेतृत्व में आपदा प्रबन्धन दल को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान करते हुए रवाना किया। उन्होंने कहा कि हमारी संवेदना पीड़ित परिवारों के साथ है। हमारे आराध्यदेव परम पूज्य गुरुदेव ने जो सेवा का सूत्र हमें दिया है, उसे पूरी तत्परता से निभाते हुए शान्तिकुञ्ज पीड़ित मानवता के दुःख-दर्द बाँटता रहा है और आगे भी इसी तत्परता से यह कार्य करता रहेगा।

कोरोना पीड़ितों के हितार्थ अखण्ड जप, यज्ञ, तर्पण

इन दिनों जब विश्वमानवता और विशेषकर देवभूमि भारतवर्ष के लोग कोरोना महामारी की विकट परिस्थितियों से जूझ रहे हैं, गायत्री परिवार लोगों की सेवा-सहायता के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। इसी कड़ी में युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज में वैशाख कृष्ण अमावस्या के दिन प्रातःकाल कोरोनानाशक विशेष प्रार्थना और मंत्रों के साथ यज्ञ हुआ, तत्पश्चात् सायं नादयोग साधना तक सामूहिक अखण्ड जप हुआ। इसके साथ ही दैनिक क्रम में इन प्रतिकूल परिस्थितियों में असमय दिवंगत हो रही देवात्माओं की शान्ति, सद्गति के लिए तर्पण भी किया जा रहा है।

स्वजनों की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए निरन्तर चिन्तित रहने वाले और अपने देव परिवार के सुख-दुःख में सदैव साथ रहने वाले अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी की प्रेरणा और निर्देशानुसार यहाँ प्रार्थना और साधनाओं का क्रम निरन्तर चल रहा है। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि जब परिस्थितियाँ विकट हों तब सर्वसमर्थ परमात्मा के गुहार लगाने की हमारी संस्कृति की परम्परा है। परम पूज्य गुरुदेव ने ऐसे सामूहिक साधना प्रयोग कई बार किये और परिस्थितियों पर नियंत्रण हुआ है। वर्तमान समय में भी गायत्री परिवार के करोड़ों परिजनों की आर्तभाव से की गई प्रार्थना इस महामारी को नियन्त्रित करने में अहम योगदान देगी।

11 मई के अखण्ड जप में अपने कालांश में भाग लेते शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ता भाई-बहिन

कोरोना महामारी से मुक्ति की प्रार्थना के साथ दिवंगतों की आत्मशान्ति तथा उनके परिवारी जनों का मनोबल बढ़ाने की प्रार्थना भी पावन गुरुसत्ता और माँ भगवती गायत्री से की गई।

शान्तिकुञ्ज में हुए 11 मई के सामूहिक साधना प्रयोग में सैकड़ों अंतेवासियों ने भाग लिया। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी ने योगदान दिया। जप, यज्ञ, श्राद्ध-तर्पण आदि सभी कार्यक्रमों में कोरोना से बचाव के सभी दिशा-निर्देशों का कड़ाई से पालन किया गया।

हरिद्वार के बीस कोविड सेण्टरों में अंकुरित अन्न पहुँचा रहा है शान्तिकुञ्ज

कोरोना संक्रमित मरीज़ों का ठीक होना उनकी जीवनी शक्ति पर बहुत निर्भर करता है। अतः दवाओं के साथ उनके आहार का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के निर्देशन में शान्तिकुञ्ज जिला प्रशासन की ओर से निर्धारित नगर के बीस से अधिक कोविड सेंटरों में अंकुरित अन्न पहुँचा रहा है।

अंकुरित अन्न अत्यंत पौष्टिक आहार माना जाता है। चार से पांच चम्मच, अर्थात् लगभग सौ ग्राम अंकुरित अन्न से एक व्यक्ति को दिनभर के लिए पर्याप्त पोषक तत्व- प्रोटीन, काबोर्हाड्रेड प्रदान करता है। इसे अच्छी तरह चबाकर स्वल्पाहार में ग्रहण किया जाना चाहिए।

शान्तिकुञ्ज से प्रतिदिन एक टन से अधिक अंकुरित अन्न कोविड सेण्टरों को पहुँचाया जा रहा है। इसमें साबुत मूंग, काला चना, सोयाबीन, मूंगफली, अजवाइन, मैथी आदि का समावेश होता है।

एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध कराई

शान्तिकुञ्ज द्वारा आसपास के कोविड संक्रमित मरीज़ों के लिए निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा भी उपलब्ध कराई गई है। यह सेवा पिछले लगभग एक माह से चल रही है।

शान्तिकुञ्ज में बनाई जा रही हैं
कोविड-19 क्रिटिकल केअर सुविधाएँ

कोविड-19 संक्रमण की दूसरी लहर अत्यंत घातक सिद्ध हुई है। देश में शायद ही ऐसे कुटुम्ब-परिवार बचे हों जो इसके संक्रमण से अब तक अछूते रहे हों। जहाँ अखिल विश्व गायत्री परिवार का हर परिजन इन विषम परिस्थितियों में अपना कुछ न कुछ योगदान दे रहा है, वहीं शान्तिकुञ्ज ने भी परिस्थितियों को देखते हुए भावी संकट से मानवता को बचाने और यथा संभव लोगों तक अधिक से अधिक सहायता पहुँचाने की विशेष तैयारियाँ की हैं। इन्हीं प्रयासों के अन्तर्गत शान्तिकुञ्ज में हाई डिपेण्डेंसी वाले रोगियों के लिए 25 बेड वाला क्रिटिकल केअर यूनिट (CCU) बनया जा रहा है। इसकी कार्यप्रगति की दैनिक समीक्षा करते हुए इसे अविलम्ब स्थापित करने के पूरे-पूरे प्रयास हो रहे हैं। देश-विदेश से परिजनों का भरपूर सहयोग भी मिल रहा है।

देश-विदेश से मिल रहा है सहयोग

लिथुआनिया निवासी देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी अलेक्ज़ेण्डर्स जंकुज़ की सहृदयता

अपनी आधी कमाई शान्तिकुञ्ज भेजी

लिथुआनिया निवासी देव संस्कृति विश्वविद्यालय के एक पूर्व विद्यार्थी अलेक्ज़ेण्डर्स जंकुज़ ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावनाओं को चरितार्थ करते हुए मानवता के समक्ष उदारता का आदर्श प्रस्तुत किया है। देसंविवि के प्राप्त सूचना के अनुसार उन्होंने भारत में कोरोना संक्रमितों की सेवा के लिए अपनी कमाई की लगभग आधी सम्पत्ति शान्तिकुञ्ज को समर्पित कर दी।

दुबई और दिल्ली से आए मशीन एवं उपकरण

दुबई और दिल्ली के परिजनों ने शान्तिकुञ्ज में स्थापित हो रही क्रिटिकल केअर वॉर्ड के लिए ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर, नेबुलाइज़र, ऑक्सीमीटर आदि की अविलम्ब व्यवस्था की। वे कोरोना संक्रमितों के उपचार के लिए आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था भी कर रहे हैं।

खम्भात से दवाइयाँ आईं : खम्भात, गुजराज के परिजनों ने शान्तिकुञ्ज में तैयार हो रहे क्रिटिकल केअर वॉर्ड के लिए कोरोना के उपचार के लिए आवश्यक महत्त्वपूर्ण दवाइयाँ भेजकर अपनी सहृदयता और उदारता का परिचय दिया है।

आर्थिक अनुदान : अहमदाबाद जिले की सानन्द शाखा ने शान्तिकुञ्ज में क्रिटिकल केअर वॉर्ड बनाने की घोषणा के साथ ही अविलम्ब सहयोग का हाथ बढ़ाया। शाखा ने ₹ 1,21,000/- का अनुदान शान्तिकुञ्ज भेजा।

चिकित्सक और चिकित्साकर्मियों की आवश्यकता है

शान्तिकुञ्ज में बन रहे कोविड क्रिटिकल केअर यूनिट के लिए अनुभवी डॉक्टर्स, नर्सेस, सम्बद्ध चिकित्साकर्मियों की आवश्यकता है। परम पूज्य गुरुदेव, परम वन्दनीया माताजी और उनके मिशन के लिए समर्पित सेवाभावी परिजन जो उपरोक्त योग्यताएँ रखते हैं वे अपना व्यक्तिगत विवरण (CV) यथाशीघ्र ई-मेल कर दें। शान्तिकुञ्ज के नियमानुसार पारिश्रमिक देय होगा।

सम्पर्क कीजिए : 9258360961, 9258360631, 9258369859, 9258360606, 9258369643

शान्तिकुञ्ज के बैंक खातों का विवरण

Vedmata Gayatri Trust-Haridwar Pan No: AAATV1261C

Bank	A/C No		IFSC Code
AXIS	1560 101 000 13846	(15 DIGIT)	UTIB0000156
BOB	0926 010 000 4639	(14 DIGIT)	BARBOHARDWA
CBI	1577 841 575	(10 DIGIT)	CBIN0280274
HDFC	0943 145 000 0157	(14 DIGIT)	HDFC0000943
ICICI	0239 010 000 10	(12 DIGIT)	ICIC0000239
PNB	3129 010 100 000018	(16 DIGIT)	PUNB0469400
SBI	1087 685 831 1	(11 DIGIT)	SBIN0002350

Email : donation@awgp.org WhatsApp No. 7817 000 926

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.5.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23